B.A. III year
I paper

Asharam in Combodia

कम्बुज में शिक्षा केन्द्रों में आश्रमों का विशेष स्थान था। कुछ विद्वान ब्राह्मण भी अपना विद्यार्थी आश्रम बनाये हुए थे। उनका साहित्यिक प्रयास किसी प्रकार से कम न था। आश्रमों के लिए राजाओं तथा अन्य सम्पन्न व्यक्तियों द्वारा प्रचुर मात्रा में दान दिया जाता था। आश्रम में अध्यापक विद्यार्थी और आचार्य निवास करते थे जिसका मुख्य उद्देश्य था पठन-पाठन।

कम्बुज के आश्रम जीवन के सम्बन्ध में अनेक प्रकार नियम और शासन थे जो कि राजकीय आज्ञा के रूप में किया जाता था। राजा यशोवर्मा के प्रह-बत अभिलेख में यशोधराश्रम की स्थापना का उल्लेख मिलता है। जिसे चन्दन पर्वत पर बनाया गया था। आश्रम के लिए यशोवर्मा द्वारा दी गई चीजों का उल्लेख उनके अभिलेखों से जानकारी ज्ञात होता है कम्बुज के आश्रम के सम्बन्ध में बहुत से कठोर नियम थे जिसे राजा को भी मानना पड़ता था। आश्रम की राजकुटी के भीतर भाग में केवल राजा, ब्राह्मण और राजपुत ही आभूषण पहन कर प्रवेश कर सकते थे। दूसरे ~~व्यक्ति~~ व्यक्ति के लिए आभूषण पहन कर प्रवेश पाना आश्रम में वर्जित था। आश्रम में भोजन एवं सुपारी भी खानावर्जित था। राजा के अतिरिक्त जो कोई भी आश्रम के सामने से गुजरे, उसे रथ से उतरकर बिना छाता लगाये पैदल चलना पड़ता था। लोले अभिलेख के अनुसार राजा यशोवर्मा द्वारा स्थापित आश्रमों की संख्या सौ थी। इन आश्रमों की स्थापना प्रधानतया शैव और वैष्णव मन्दिरों के साथ की गई थी जिसके कारण ये शैव आश्रम या वैष्णव आश्रम कहाते थे।

यशोवर्मा ने अपनी बौद्ध प्रजा की आवश्यकता को पूरा करने के लिए बौद्ध आश्रमों का भी निर्माण कराया था। इन आश्रमों में जो अध्यापक और विद्यार्थी विद्या पढ़ाने या पढ़ने में लीन रहते थे उनके भोजन आदि का व्यवस्था राजा एवं अन्य व्यक्तियों किया जाता था। ~~उसका~~ उसका वर्णन राजा जयवर्मा सप्तम के ता-प्रोह्म अभिलेख में वर्णन मिलता है।

आश्रमों में पठन-पाठन का कार्य

होता था। अतः वहाँ मसीपात्रों (दवातों) और स्याही की भी आवश्यकता पड़ती थी। देव-प्रणम अभिलेख में उसका वर्णन किया गया है। पुस्तकों की प्रतिलिपियाँ तैयार करने का कार्य भी उन आश्रमों सम्पन्न होता था और हस्तलिखित ग्रंथ को बहुत बहुमूल्य माना जाता था। राजा सूर्यवर्मन II द्वारा आश्रम में दिए दान का वर्णन बन-थेत अभिलेख में उल्लेख मिलता है।

राजाओं के अतिरिक्त अन्य सम्पन्न व्यक्तियों द्वारा आश्रम स्थापित करने का वर्णन मिलता है। यशोवर्मा पंचम की बहन इन्द्रलक्ष्मी थी जिसका विवाह दिवाकर भट्ट नामक ब्राह्मण के साथ हुआ था। यह दिवाकर भट्ट भारत के उस प्रदेश के निवासी थे- जहाँ सुन्दर कालिन्दी (यमुना) नदी बहती है, जहाँ कृष्ण ने कालियानाग का मर्दन किया था। और छत्तीस हजार ब्राह्मणों द्वारा गाते-गाने वाले ऋक, यजु और सामवेद के मन्त्रों की ध्वनि से जहाँ की भूमि प्रतिध्वनित होती रहती थी। सम्भवतः दिवाकर भट्ट मथुरा से कम्बुज देश आए थे- और उनकी विद्या तथा ज्ञान से प्रभावित होकर राजा राजेन्द्रवर्मा ने अपनी पुत्री- इन्द्रलक्ष्मी का विवाह उनके साथ कर दिया था। दिवाकर भट्ट ने कम्बुज देश के मधुवन नामक स्थान पर विष्णु-महेश्वर लिंग को द्विजेन्द्र के नाम से और विष्णु की एक मूर्ति को प्रतिष्ठापित किया था।

कम्बुज देश के उन आश्रमों में किन विषयों एवं विद्याओं का अध्ययन-अध्यापन था। वह आश्रम विद्या के केन्द्र होने के साथ ही साथ धर्म के भी केन्द्र हुआ करते थे। उन आश्रमों में धर्मशास्त्रों का पठन-पाठन हुआ करता था। राजा यशोवर्मा प्रथम के वन्ते स्रोक (?) प्रतिलेख में आश्रम के कुलपति को आदेश दिया गया है कि वह सब आश्रम-वासियों के भोजनादि और आतिथ्य की व्यवस्था करें। अध्यापक आलस्य का परित्याग कर निरन्तर वेदपाठ (वेद-पाठ) में तत्पर रहा करें। आश्रमों में किसका कितना सम्मान किया जाय और नियमों का उल्लंघन करने पर क्या दण्ड दिया जाय, इस विषय में भी सब व्यवस्थाएँ अभिलेखों में वर्णन मिलता है। ये दण्ड राजपुत्रों, राजा के सम्बन्धियों तथा मन्त्रियों के लिए बहुत अधिक हैं और व्यापारियों तथा सर्वसाधारण के

Scanned with CamScanner

लिए अपेक्षणीय क्रम है।

अतः उपर्युक्त वर्णन के सन्दर्भों से स्पष्ट हो जाता है कि कम्बुज में धार्मिक आश्रम और मंदिर ही शिक्षा के केन्द्र थे। इन आश्रमों का प्रमुख कुलाध्यक्ष (कुलपति) कहलाता था। लेखों में उनके प्रशासन सम्बन्धी नियम भी दिए गए हैं। वैष्णव आश्रमों में इस तरह की सुविधाएं प्रदान की जाती है। आगन्तुकों के आदर-सत्कार के सम्बन्ध में वैष्णव आश्रम में तीन वेदों के ज्ञाता आचार्य शाब्दिक ब्रह्मचारी एवं क्रम के आदर के पात्र थे। पंचरात्र और व्याकरण के शिक्षक को विशेष आदरणीय स्थान प्राप्त था। सभी आश्रमों में दो लेखक, दो पुस्तकरक्षक और दो रसोइया तथा छः पत्रकार रहते थे। ये आश्रम शिक्षाकेन्द्र थे और इनमें जातीयता को स्थान न था। इस शिक्षाकेन्द्र आश्रम से ब्राह्मण तथा बौद्ध विद्वान शिक्षा प्राप्त कर निकलते थे।